Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 04 APR 2024 Pages 20 A.S. Rs 100

હે! કરુણાના કરનારા, તારી કરુણાનો કોઈ પાર નથી...

सत्संग समाचार

❊ रविवार, दि. ३ मार्च प.पू. ज्योतिबहन के ९०वें प्रागट्यदिन निमित्त प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. माधुरीबहन और अन्य संतबहनों, हरिभक्तों गुणातीत ज्योत, विद्यानगर गये थे।

दि. ३ की सुबह दिल्ली से प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनें, पवई से पू. माधुरीबहन और संतबहनें, हरिधाम से पू. सौजन्यबहन और संतबहनें तथा स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में गुणातीत ज्योत के पप्पाजी हॉल में ज्योतिबहन की मूर्ति के भव्य स्वागत के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। कई हरिभक्तोंने

P.P. Jyotiben's Birthday celebration at Gunatit Jyot

स्वानुभव के प्रसंगो द्वारा ज्योतिबहन का सुंदर माहात्म्यदर्शन कराया। पवई मंदिर की ओर से उर्मिलाबहन और संगीतवृंदने गुजरात के सुप्रसिद्ध लोक कला 'माताजीनुं छपाकरुं' के माध्यम से ज्योतिबहन का बहुत सुंदर भजन उनके चरणों में अर्पण किया, जिसकी सभीने बहुत सराहना की। प.पू. हंसादीदीने उर्मिलाबहन को मंच पर बुलाकर उनका अभिवादन किया। उसके बाद वशीभाईने ज्योतिबहन का माहात्म्यदर्शन कराया।

सभी मंचस्थ स्वरुपों के आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए।

पवई मंदिर की ओर से पू. जयश्रीबहन और पू. कृपाबहनने ज्योतिबहन की मूर्ति को विशिष्ट हार अर्पण किया। अंत में Audio द्वारा गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. हंसादीदी के भी आशीष मिले।

उसी दिन शाम को पवई के सभी मुक्तों अनुपम मिशन-मोगरी, ब्रह्मज्योति गये थे। वहाँ आयोजित यज्ञ में सभीने भाग लिया। संतभगवंत साहेबजीने प.भ. घनश्यामभाई और प.भ. इलाभाभी को यज्ञ में बिठाया और वशीभाई को अपने साथ बिठाकर पूरे यज्ञ का लाभ दिया। उसके बाद साहेबजी के साथ संध्या आरती के बाद सभीने प्रसाद लिया और मुख्य मंदिर दर्शन करके ब्रह्मज्योति के प्रांगण की विशिष्ट स्मृतियाँ ताजी की। साहेबजीने खास उर्मिलाबहन के पास भजन भी गवाया था। ऐसी सुंदर स्मृति के साथ सभी उसी दिन वापस मुंबई जाने निकले।

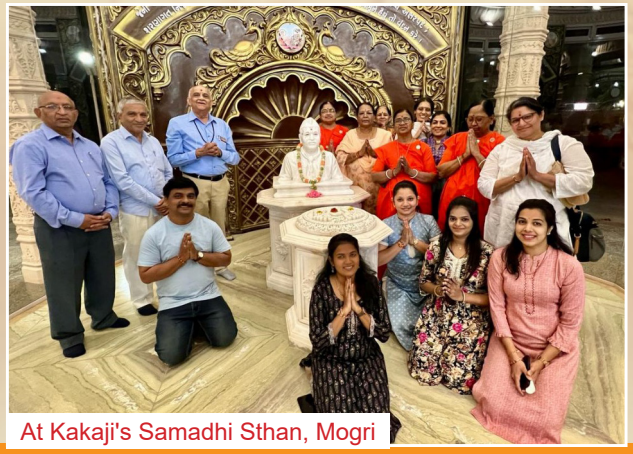

At Kakaji's Samadhi Sthan, Mogri

At Pappaji Tirth

Yagna Vidhi at Anoopam Mission

❊ गुरुवार, दि. ७ मार्च की भजन संध्या 'ऊँची मेडी ते मारा संतनी रे...' विषय पर गुणातीत समाज के अनुपम सर्जक और हम सभी के प्राणाधार गुरुहरि काकाजी महाराज के ३९वे स्मृतिदिन निमित्त सूरत में प.भ. पुरुषोत्तममामा के निवासस्थान के प्रागंण में भक्तिभाव से मनाया गया।

Bhajan Sandhya at Surat

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृतिदिन मनाने का नक्की करने का सोच रहे थे तब सहज ही पुरुषोत्तममामा और प.भ. चंद्रकांतभाई पटेल (छीणम) (पुरुषोत्तममामा के समधी) से बात करके दि. ७ से ९ दौरान कार्यक्रम सहज ही करने का पक्का हो गया। देश-विदेश से कई हरिभक्तों यहाँ हाजर थे। काकाजी की एक ही भावना थी कि सभी सुखी हो। बडेपुरुष कृपा करके हमें जो स्मृति देते है उससे हमारा जीवन बदल जाता है।

सन् १९९२ में पवई मंदिर का पंप नया बनाना था। उसमें कुछ सवा लाख रुपये खर्च होनेवाले थे। तभी हम भाईयों तारदेव मंदिर रहते थे। भरतभाई पूजा कर रहे थे तब वो बात उनको याद आई। काकाजी पर पूरा भरोसा रखकर वे धुन कर रहे थे। उस समय उल्हासनगर से रामस्वरुप शर्माजी आये। उनकी जमीन का कुछ काम हो गया था तो उसकी सेवा का बराबर सवा लाख उन्होंने भरतभाई के हाथ में रखे। काकाजी पर जो अतूट भरोसा है वो आज भी काम कर रहा है।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी साक्षात्कारी पुरुष थे। उन्हें कोई मिलता तो वो भूल नहीं सकता। काकाजीने ब्राह्मीस्थिति कैसे प्राप्त करनी वह खुद जीवन जीकर बता दिया और उसे कैसे जीवन में उतारना है वह सहज शब्दों में सीखाया। काकाजीने साधना की जो सरल बातें बताई है वो मैं

बताता हूँ। **(१)** आप जिसको भी मानो वो स्वामिनारायण का साक्षात् स्वरुप है और उसमें महाराज प्रगट है ऐसा मानकर जीयेंगे तो आपने उस स्वरुप को पहचान लिया है। इस तरह से गुणातीत संत को मानेंगे तो हमारे सारे प्रश्न सहज ही हल हो जायेंगे। **(२)** कोई भी प्रसंग बने तब अंतर्दृष्टि करनी चाहिए कि ऐसा प्रसंग क्यूँ बना? अंतर से तपास करो। कोई भी तकलीफ हो या सेवा करनी है लेकिन हो नहीं रही है तो उसके लिये अंतर से प्रार्थना करो। **(३)** कोई भी कार्य करो तो स्वामिनारायण धुन करके करो। तो एकदम सरलता से काम हो जायेगा। निर्गुणभाव को प्राप्त करने के लिये भगवान की स्मृति करके कार्य करना चाहिए।

काकाजी कहते थे कि कोई भी विचार आये तो उसे करने के लिये तीन बार धुन करके छोड दो और फिर जो प्रेरणा हो वो करो। उसमें महाराज हमें सहाय करेंगे और ब्राह्मीशक्ति हमारे द्वारा काम करेगी। हमें स्वभाव छोडने के लिये दो हरिभक्तों की क्रिया और स्वभाव पसंद करना है। काकाजीने जो भी बातें सीखाई है उसे हम जीवन में दृढ करेंगे तो बहुत फायदा होगा। हमें स्थिरता की स्थिति प्राप्त कर लेनी है। काकाजी कहते थे कि आप से कुछ भी नहीं होगा तो कम

Bhajan Sandhya at Surat

से कम हररोज सुबह प्रार्थना में गुणातीत स्वरुपों को प्रार्थना करके धन्यवाद दो। हे काकाजी! आपने हम पर बहुत करुणा की है उसका हम ऋण अदा कर ही नहीं सकते तो आप राजी हो ऐसा हमारा जीवन बने वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि दि. ७ मार्च को गुरुहरि काकाजी महाराज सुबह ९.२० बजे स्वधाम पधारे थे। उस दिन की तिथि महा वदी द्वादशी थी। आज भी वही तिथि आई है। हर १९ साल के बाद ऐसा योग आता है। काकाजी बडे धार्मिक कुटुंब में से आये थे। गुणातीतानंदस्वामी के तीन शिष्य – भगतजी महाराज, जागास्वामीजी और कृष्णजी अदा। भगतजी महाराज का समर्पणभाव काकाजी में दिखाई पडता है। भगतजी महाराजने भी दि. ७ नवंबर को देहलीला संकेली थी। वैसे बहुत सारी बातें उनसे मिलती है। हमें हरपल ऐसा मानना है कि हर किसीमें काकाजी ही काम कर रहे है। अगर हमारी भक्ति सच्ची होगी तो हमें काकाजी के दर्शन अवश्य होंगे। तो हम हरपल आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

पुरुषोत्तममामा और चंद्रकांतभाई पटेलने काकाजी की मूर्ति को विशिष्ट हार पहनाया।
साथ ही पवई की सभी संतबहनोंने भी काकाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया।

नचिकेता चेरिटेबल ट्रस्ट के श्री. रविभाई पधारे थे उनका भी अभिवादन हुआ।

राजकोट गुरुकुल के संत श्री. मनुभाई भी इस अवसर पर पधारे थे उनका भी खास स्वागत हुआ।

Bhajan Sandhya at Surat

Mahashivratri celebration at Surat

❊ शुक्रवार, दि. ८ मार्च महाशिवरात्री तथा प.पू. ज्योतिबहन के तिथि प्रागट्यदिन निमित्त शाम को सूरत में ही विशिष्ट भजन संध्या हुई। जिसमें श्री. मिहिरभाई मालवी तथा हमारी भजन मंडलीने बहुत अच्छे भजन प्रस्तुत करके सभीको भावविभोर कर दिया। वैसे तो प.पू. विजयप्रकाशस्वामीजी पधारनेवाले थे, लेकिन अचानक उनकी सेहत बिगड जाने से उन्होंने मिहिरभाई को इस भजन संध्या में भेजा था। उन्होंने बहुत अच्छी तरह से सभीको भजन में आनंद कराया।

Mahashivratri celebration at Surat

❊ शनिवार, दि. ९ मार्च की सुबह पुरुषोत्तममामा के घर विशिष्ट महापूजा हुई। उस दिन उनके पिताश्री की स्वधामगमन तिथि होने के कारण उन्होंने खास महापूजा करवाई थी। सभी की महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था भी उन्होंने की थी। वहाँ प.भ.डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट का ६९वाँ जन्मदिन भी आनंदपूर्वक मनाया।

Mahapooja at Purushottammama's place, Surat

उसके बाद सभी संतभाईयों और संतबहनों श्रीजी महाराज के परमभक्त तथा लाडले प.भ. अरदेशर कोटवालजी के घर पधारे और स्वामिनारायण भगवानने उनको दी हुई पाघ के दर्शन किये। ऐसे तो सिर्फ भाईदूज के दिन सभीको दर्शन के लिये मौका दिया जाता है, लेकिन अरदेशर कोटवालजी के परिवार के सभ्योंने पवई के भक्तों के दर्शन की खास व्यवस्था की थी। सभीने उनको धन्यवाद दिया।

At P.B. Ardeshar Kotval's place, Surat

Mahapooja at Purushottammama's place, Surat

❊ गुरुवार, दि. १० मार्च को पू. अश्विनभाई, पू. हितेनभाई, प.भ. वालजीभाई और प.भ. मुकेशभाई सुरत में खास पू. सत्श्रीस्वामीजी को मिलने गये थे।

With P. Satshriswamiji, Surat

❊ मंगलवार, दि. १२ मार्च को प.पू. गुरुजी के प्रागट्यपर्व निमित्त प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. राजुभाई, पू. अश्विनभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तों खास दिल्ली पधारे थे।

Parshadi Diksha Vidhi at Delhi

सुबह गुरुजी के तिथि प्रागट्यदिन निमित्त पू. सरलभाई और पू. शिवम्भाई को पार्षदी दीक्षा दी गई। साथ ही प.भ. नक्षत्रभाई और प.भ. निरेकभाई को सेवक की दीक्षा दी गई। छोटी उम्र में भी सेवक की दीक्षा लेकर उन्होंने सराहनीय निर्णय लिया है। सभीने उनके सेवकभाव और समर्पण को बिरदाया। उनके माता-पिताने भी इस तरह दोनों युवकों को प्रेरित करके अपनी मंजूरी दी इसलिये उनको भी बहुत धन्यवाद दिया। नक्षत्रभाई के बर्ताव से उनके स्कूल के प्रिन्सीपाल भी बहुत खुश हुए और उन्होंने भी नक्षत्र को आशीर्वाद दिये और अपनी शुभेच्छा व्यक्त की। निरेकभाई तो अचानक ही दीक्षा लेने तैयार हो गये तो उनके निर्णय को भी बहुत धन्यवाद करते है।

❊ बुधवार, दि. १३ मार्च को गुरुहरि काकाजी महाराज के दिव्य मानससपूत प.पू. गुरुजी के ८७वाँ प्रागट्यपर्व निमित्त सुबह में संतभगवंत साहेबजी, प.पू. बापुस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी, प.पू. दिनकरभाई, पवई के संतभाईयों, पू. विरेनभाई, डॉ.पू. मनोजभाई सोनी, पैठण के महंत श्री. एकनाथ महाराज के वारिस

Bhagwati Diksha Vidhi Mahapooja at Delhi

सद्गुरु १०८ प.पू. प्रकाशदासजी तथा गुणातीत ज्योत, पवई और दिल्ली की संतबहनें एवम् देश-विदेश के कई हरिभक्तों की उपस्थिति में पू. सरलभाई को पू. शीतलदासजी और पू. शिवम्भाई को पू. वत्सलस्वरुपदासजी नाम अर्पण कर शास्त्रोक्त विधि द्वारा महापूजा में भागवती दीक्षा दी गई। प.भ. नक्षत्रभाई को पू. हंसदेवभाई और प.भ. निरेकभाई को पू. नीरवभाई का नाम प्रदान किया गया।

शाम की सभा में सभी वडील स्वरुपों एवं गुणातीत समाज के सभी ज्योतिर्धरो तथा हरभिक्तों की हाजरी में तथा कई महानुभावो की उपस्थिति में साहेबजी, बापुस्वामीजी, दासस्वामीजी, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, राजुभाई, किशोरभाई मास्टर्स, अश्विनभाई, विरेनभाई तथा अन्य केन्द्रो के संतों, संतभाईयों, हरिधाम से, गुणातीत ज्योत से, पवई से संतबहनों तथा स्थानिक संतबहनों, हरिभक्तों और महानुभावों की उपस्थिति में ८७वाँ प्रागट्यदिन आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

P.P. Guruji's 87th Birthday celebration at Delhi

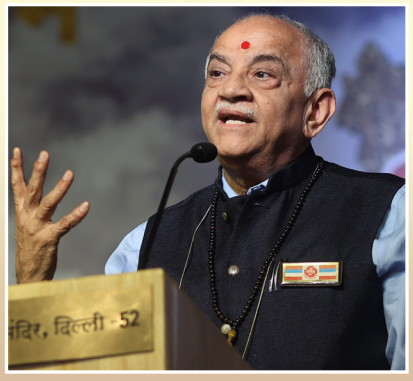

प्रासंगिक उद्‌बोधन में प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुणातीतानंदस्वामीजी की बात में कहा है कि कार्य पर से कारण का पता चलता है। जिसका कार्य इतना महान है तो उस कार्य को करनेवाला कितना महान होगा! गुरुजी का वो कार्य दिल्ली में दिखाई देता है। हर कार्य में उनको एक ही भावना है कि काकाजी राजी हो। २-४ परिवार के साथ सालों पहले दिल्ली में सत्संग का कार्य शुरु किया तो आज ४०० परिवार सत्संग से जुड गये। ये मंदिर, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, ३ फरवरी पार्क, इन सबके लिये गुरुजीने अथाग परिश्रम किया और अपने साथ सभी भक्तों को भी इस मंगल कार्य में जोडा। मंदिर में संतों, संतभाईयों, संतबहनें और आत्मीय कुटुंब ऐसे तैयार किये कि गुरुजी को जितना धन्यवाद दे उतना कम है। पूराने से लेकर नये भक्तों का पूरा ध्यान वे रखते है। हम अक्षरधाम में ही बैठे है, तो आज जो भी यहाँ संकल्प करेंगे, हमारा काम अवश्य होगा। काकाजी कहते थे कि एक आध्यात्मिक और एक व्यवहारिक संकल्प करो। तो हे गुरुजी, पूरा गुणातीत समाज जहाँ है वहाँ से आगे ज्यादा प्रगति करें वही प्रार्थना।

प.पू. दासस्वामीजी ने कहा कि योगीजी महाराजने मुझे दीक्षा दी और गुरुहरि काकाजीने हरिप्रसादस्वामीजी को सौंप दिया। आध्यात्मिक विकास में काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजीने मेरा ऐसा अद्‌भुत जतन किया जिससे मैं यहाँ मंच पर बैठा हूँ। कोठारीस्वामीजी, शास्त्रीस्वामीजी, निर्मलस्वामीजी, प्रेमस्वरुपस्वामीजी और गुरुजी जैसे भगवदी एकांतिक संत मुझे मिले। स्वामीजी के जाने के बाद मुझे बहुत खालीपना लगता था, लेकिन उस समय गुरुजीने बहुत प्रेम किया जो शब्दों से भी परे है। मेरा Bone का Opration था तब मैं यहाँ दिल्ली आया था। तब जो भी खर्चा हुआ था वो गुरुजी को बिना बताये राकेशभाईने सारी व्यवस्था कर दी। उन्होंने मुझे कहा कि आप मंदिर में जाकर आराम करें, ये सब चलता रहेगा। मेरे आँख में आंसु आ गये थे कि आज के जमाने में तो सगा भाई भी इतना नहीं करता, जितना ये भक्तों हमारे लिये करते है। आत्मबुद्धि और प्रीति की हम बात करते है वह सिंचन गुरुजीने यहाँ के भक्तों में किया है। यहाँ सचमुच सभी मंदिर को अपना घर मानकर जिते है। गुरुजी के साथ मेरे इतने सारे प्रसंग है कि कहने जाये तो रात भी कम पड जाये। पूरा कार्यक्रम और अन्य कार्य सुहृदस्वामीजीने सँभाला वह बहुत बडी बात है। यहाँ के समाज के लिये मुझे इतना कहना है कि गुरुजी तो बडे है ही लेकिन सुहृदस्वामीजी और अन्य संतों का भी उसी भाव से स्वीकार करें। योगीबापाने सुनृत में जो कहा है उसके मुताबिक यहाँ के समाज के लिये गुरुजी ईष्टदेव के समान है। भगवतकृपा में एकबार गुरुजी के बारे में लिखा था कि शुरुआत में यहाँ पर कोई भक्त नहीं था। कोई विकास भी नहीं हुआ था।

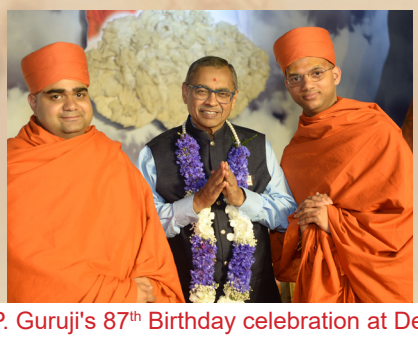

P.P. Guruji's 87th Birthday celebration at Delhi

लेकिन काकाजीने कहा है इसलिये यहाँ चिपककर रहना है। It is not the reason why? But do and die. गुरुजी बहुत बुद्धिशाली थे फिर भी कभी नहीं सोचा होगा कि मुझे यहाँ क्यों रखा? पहले सोखडा, सांकरदा से संतों को बुलाना पडता था। लेकिन आज ८-८ संतों यहाँ तैयार हुए है। ये कार्य गुरुजीने किया है। हे गुरुजी, हे साहेबजी, अन्य संतो आपने जैसे प्रेमस्वरुपस्वामीजी को स्वामीजी का स्वरुप मानकर स्वीकार किया है वैसे हरिधाम के हम सभी संतों उनका स्वीकार करेंगे तब स्वामीजी को अंतर में हाश होगी। गुरुजी को १०० साल तक ऐसे ही निरामय रखें वही महाराज और सभी गुणातीत स्वरुपों के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुजी यानि कुटुंबभाव। वो केवल बोलकर रखा नहीं है लेकिन गुरुजीने वह जीवन जीकर दिखाया है। वो अपनापन का भाव वे खुद तो रखते है, लेकिन हरिभक्तों में भी उसका सिंचन किया है। गुरुजी जहाँ भी जाते है तो एक-दो जन नहीं लेकिन पूरे भक्तमंडल को साथ में लेकर जाते है। एक दिन पहले रात को १२ बजे हम पधरामणी के लिये करीब ३० जन गये थे। जहाँ

हम गये थे उन्होंने पूरी व्यवस्था अच्छे से की थी। ऐसे अद्‌भुत कुटुंबभाव का दर्शन यहाँ के भक्तों में सहज ही होता है। गुरुजी के पास कोई आता है और उनको पता चले कि इस भक्त को ये चीज पसंद है तो बाद में जब वो आयेगा तब गुरुजी वह चीज उसे जरुर दे देंगे। कल जो युवकों साधु बने उनसे पूछे कि क्यों साधु बने? तो एक ही बात कहते है कि केवल गुरुजी से प्रेम है और उनकी मर्जी है इसलिये साधु बने। वे ऐसे जीवन जीते है जिससे गुरुजी राजी हो। साधना करना सरल नहीं है लेकिन ऐसा मानेंगे कि हमें जो मिले है वह हमें अच्छे लगते है तो कठिन भी नहीं लगेगा। गुरुजी की साँस भी काकाजी के लिये ही चलती है। शास्त्रीजी महाराजने ४७ साल में ७ मंदिर बनाये। योगीजी महाराजने जंगम मंदिर बनाने का संकल्प किया और उसमें ७१ पढे-लिखे साधु तैयार किये। गुरुजी की कुछ विशेषता मैं बताता हूँ। **(१)** Thoughtful Action - गुरुजी की छोटी छोटी क्रिया में भी वो कुछ सीखाकर जाते है। **(२)** Discipline - काकाजीने जो कहा है जैसे उनकी मर्जी है वैसे जीवन जीना उस मर्यादा के साथ वे जीवन जीते है। काकाजी कहते थे कि अभेददृष्टि और अविरोधवृत्ति। वह गुरुजी के जीवन में दिखाई पडती है। यहाँ के हरिभक्तों में कुटुंबभाव से ऐसी आत्मीयता से जीवन जीना सीखाते है। गुरुजी आज के लोगों की सोच और आज के Technology के हिसाब से सामनेवाले को मार्गदर्शन देते है। तो हम जो भी स्वरुप के साथ जुडे है उनके साथ निर्दोषबुद्धि बढाएँ और सभी में प्रभु का ही दर्शन करें, 'ज्यां जुवे त्यां रामजी' की भावना रखकर जीवन जीये तथा गुरुजी हम पर अधिकार कर सके ऐसा हमारा संबंध उनके साथ हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी थे तब गुरुजी उनमें इतने खो जाते थे कि खुद का जन्मदिन भी भूल जाते थे। उसके बाद जब पप्पाजी यहाँ आते थे तब भी उनकी सेवा में इतने मग्न हो जाते थे कि खुद के जन्मदिन पर पप्पाजी का अपने आसन पर बिठाकर उनके गुणगान गाते थे। ये एक गुरुजी की विशेषता है कि मैं कुछ नहीं हूँ। गुणातीत स्वरुपों राजी हो वही उनकी भावना होती है। महाराजने कहा है कि जोड में रहो। वह जोड की बात गुरुजीने पकडकर रखी है। कल जिन युवकों को साधु बनाया वह जोड में ही किये। वैसे आज हम गुरुजी और संतभगवंत साहेबजी का भी प्रागट्यदिन मना रहे है। छोटे या बडे

भक्तों में भी गुरुजी काकाजी के दर्शन करते है। सन् १९९१/९२ में हम गुरुजी के प्रागट्यदिन पर आये थे। तब काकाजी की कोट पहनी हुई एक मूर्ति यहाँ रखी गई थी। वह देखकर मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो काकाजी साक्षात् बिराजमान हो ऐसा लग रहा था। वह बात मैंने गुरुजी को बताई। फिर जब हम वापस अमरिका जाने निकले तब अेरपोर्ट पर जयप्रकाशभाईने मुझे एक पेकेट दिया। तब पता चला कि काकाजी की मूर्ति जो मुझे पसंद थी वह उन्होंने मेरे लिये भिजवाई। वह आज Waukegan में हमने मंदिर में बिठाई है। जब भी वह मूर्ति देखते है तो सहज ही गुरुजी की याद आती है। साहेबजीने हमें कई सूत्रों दिये है। आज हम मनोजभाई सोनी को देखे तो UPSC के Chariman होने के बावजुद गुणातीत स्वरुपों के आगे सेवक बनकर रहते है। आलस-प्रमाद-तमोगुण के भाव टालने के लिये सेवा से जुडे रहना चाहिए। गुरुजीने हमें ऐसा सूत्र दिया है कि गुणातीत समाज की एकता और अखंडितता ही हमारा ध्येय है। तो हम सुहृदभाव से हिलमिलकर सभी में केवल गुण ही देखे वही प्रार्थना।

उसके बाद पू.डॉ. दिव्यांगभाईने पू. नित्यादीदी रचित **'मेरी थाम ली गुरुजीने कलाई, मुझे ओर क्या चाहिए...'** भजन प्रस्तुत किया। सभीको वह बहुत पसंद आया।

संतभगवंत साहेबजी ने कहा कि हमारा गुणातीत समाज भक्ति के मार्ग पर कैसी ऊँचाई तक पहुँचा है वह इस सुंदर भजन से पता चलता है। इस भजन में गुरुजी की गुणातीत अवस्था का दर्शन हमें हो रहा है। योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजीने गुणातीत समाज को जो अद्भुत भेट दी वह गुरुजी है। उपनिषद, श्रीमद् भगवतगीता और ब्रह्मसूत्र यह तीन हमारे सनातन हिंदु धर्म के ग्रंथों को ध्यान से पढा जाये। १२०० साल से षट्दर्शन ही चलता था, फिर प्रमुखस्वामी महाराज की आज्ञा और महंतस्वामीजी के आशीर्वाद से पूज्य भद्रेशस्वामीने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का दर्शन सनातन हिंदु धर्म में स्थापित किया। इस तरह गुणातीतभाव में जीनेवाले भी साधु ही है। संत की आत्मा में परमात्मा है। उसको प्रकाशित करने का काम भगवानधारक संत ही कर सकते है। वह गुरुजी यहाँ कर रहे है। सुहृदस्वामीजी और अन्य संतों, सेवकों प्रभु के भाव से सभी की अद्भुत सेवा कर रहे है। यहाँ जो भी शक्ति काम कर रही है इससे सबकुछ प्रकाशित हो गया है कि वह केवल गुरुजी से ही हुआ है। काकाजी कहते थे कि आनंद करो।

वह गुरुजी सभीको करवाते है। हमें एक ही चीज करनी है कि भजन करो, प्रार्थना करो, तो सत्पुरुष स्वयं आपको ढूँढ लेंगे। सत्पुरुष की आज्ञा का पालन करेंगे तो हमारा अंतर बदल जायेगा। मेरे गुरु को जो पसंद है केवल वही करना है। गुरुजी को काकाजी के प्रति असाधारण प्रेम है। काकाजी कहते थे कि जहाँ बादशाह वहाँ बजार। बादशाह बजार नहीं जाता, वो जहाँ खडा होता है वही सबकुछ उनके पास अपनेआप तैयार हो जाता है। वैसे गुरुजीने यहाँ ऐसा मंडल खडा किया है जो बिना बोले सारी व्यवस्था कर देता है। बाईबल में लिखा है कि भगवान के धाम में जाने का दरवाजा सूँई के जितना बारीक है। वैसा बनकर जो जायेगा वही उसमें प्रवेश कर पायेगा। स्वामीजी कहते थे कि भूलकुं बनकर रहोंगे तो अक्षरधाम में जा

पाओंगे। वैसे गुरुजी भूलकुं की तरह जीवन जीते है। तो गुरुजी का स्वास्थ्य हमेशा निरामय रहे और उनके अंतर की प्रसन्नता सभी को सहज ही प्राप्त हो वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीष बरसाते हुए कहा कि अभी जो नित्यादीदी रचित प्रार्थना सभीने सुनी वह हम निरंतर याद करें और प्रार्थना करें कि यह आशीष हम भूले नहीं। सभी गुणातीत स्वरुपों, संतों, संतभाईयों हमारे लिये विशिष्ट प्रार्थना करें।

पवई मंदिर की ओर से गुरुजी को विशिष्ट हार और भेट संतभाईयोंने अर्पण की।

P.P. Guruji's 87th Birthday celebration at Delhi

इन दो दिन दौरान पवई के संतभाईयोंने दिल्ली में प.भ. बंसलभाई तथा प.भ. अनिलभाई शर्मा के घर पधरामणी भी की।

At P.B. Bansalbhai's Place, Delhi

At P.B. Anilbhai's Place, Delhi

करीब तीन महिने की धर्मयात्रा के बाद प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्सने पेरिस के लिये प्रस्थान किया।

❊ **शनिवार, दि. २३ मार्च को देश-विदेश के युवकों द्वारा आज की युवापेढी को भविष्य में आगे बढने के लिये विशिष्ट Zoom App द्वारा International सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रारंभ में अनुपम मिशन के प.पू. अश्विनभाई के Video द्वारा दर्शन और आशीष का लाभ सभीको मिला। उसके बाद प.भ. परिक्षितभाई मोदी (USA)ने Planning and Management style of BAPS पर, प.भ. तुलजेशभाई चौधरी (Nagpur)ने श्रीमद् भगवतगीता पर, प.भ. नमनभाई लाड (USA)ने Upcoming Trends in Tech Industry पर, प.भ.डॉ. तुलनाबहन शर्मा (Gujarat)ने Spiritual Intelligence पर, प.भ. पूर्वीबहन देसाई**

(USA)ने Latest Innovation by Google पर, पू. अभिषेकभाई (Delhi)ने प्रत्यक्ष गुणातीत संत की निर्दोषबुद्धियुक्त सेवा पर अच्छी जानकारी दी। बाद में दिल्ली से प.पू. गुरुजी, पेरिस से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।

❊ रविवार, दि. २४ और सोमवार, दि. २५ मार्च को ब्र.स्व. भगतजी महाराज के १९५वें और संतभगवंत साहेबजी के ८५वें प्रागट्यपर्व निमित्त प.पू. भरतभाई, प.पू वशीभाई, पू. अश्विनभाई, प.भ. घनश्यामभाई तथा पवई की संतबहनें खास गुजरात पधारे थे।

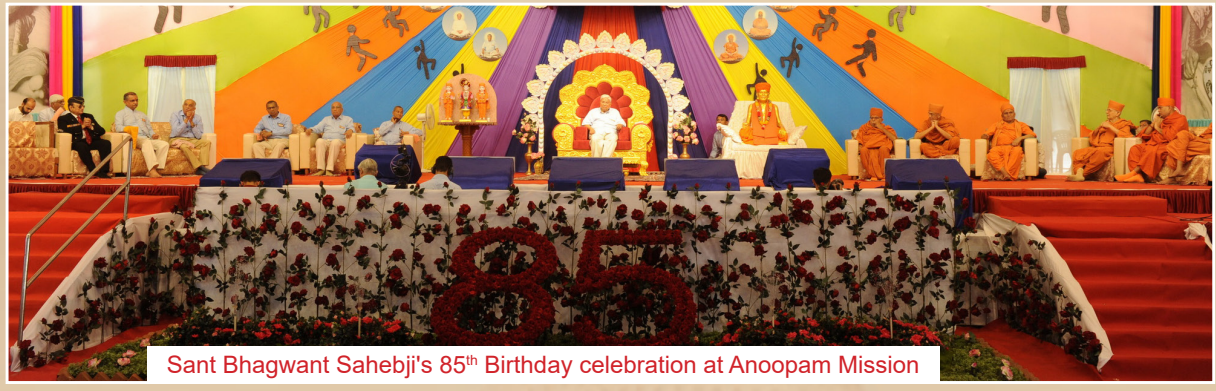

Sant Bhagwant Sahebji's 85th Birthday celebration at Anoopam Mission

दि. २५ मार्च धुलेटी के दिन सुबह साहेबजी का ८५वाँ प्रागट्यपर्व अनुपम मिशन, मोगरी में हरिधाम से प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी, समढियाला से प.पू. निर्मलस्वामीजी, पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, दिल्ली से पू. राकेशभाई तथा कईं संतों, संतभाईयों, संतबहनों तथा देश-विदेश के कई हरिभक्तों, महानुभावों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया गया।

प्रासंगिक उद्‌बोधन में संतों, संतभाईयोंने साहेबजी के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि योगीजी महाराज हमें मिले और उन्होंने आध्यात्मिकता की नईं परिभाषा हमारे समक्ष रखी। उन्होंने पढे-लिखे संतों, संतभाईयों तैयार किये और काकाजी-पप्पाजी को निमित्त बनाकर बहनों का भी काम किया। उस प्रकार हमें साहेबजी की भेट मिली। यहाँ के भक्तों की बातें सुनते है तो लगता है कि साहेबजीने

इनका अद्‌भुत घडतर किया है। साहेबजी बारबार अक्षरपुरषोत्तम उपासना की बात बोलते है। उस कार्य को डॉ. मनोजभाई सोनी और अन्य साथी मिलकर पूरी दुनिया में फैला रहे है वह बहुत बडी बात है। आज काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा, कांतिकाका

को खास याद करते है। साहेबजी के लिये योगीबापा कहते थे कि आप तो ८० ब्रह्मविद्या के भोमिया के महारथी हो। साहेबजीने उस बात को आज साकार कर दिया है। तो साहेबजी, जैसे आपने अपने गुरु को राजी किया है वैसे हम हमारे गुरु का राजीपा सहज ही प्राप्त कर ले वही प्रार्थना।

संतभगवंत साहेबजी ने आशीष देते हुए कहा कि सोखडा में शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से योगीजी महाराजने मंदिर तैयार किया। वहाँ पारायण चल रही थी। पारायण के बाद अल्कापुरी जाने योगीबापा निकले। तब १६ साल की छोटी आयु में मैंने पहलीबार बापा को देखा। उनके पैर पडे तब उन्होंने खुद मुझे खडा किया और मेरी ओर एक नजर से देखते रहे। उसी समय मुझे उनसे Love at first sight हो गया। बापा की वह दृष्टि से मेरे अंदर कुछ अलग की परिवर्तन आ गया। उसके बाद इस वस्त्र में आ गये और कैसे साधनामार्ग में जुड गये कुछ पता भी नहीं चला। शुरुआत में हरिप्रसादस्वामीजीने हमें बहुत प्रेम दिया और जीवन जीने की तालीम भी दी। फिर योगीबापाने गुरुहरि काकाजी के साथ हमें जोडा। वे खुद प्रगट थे फिर भी हमें काकाजी की आज्ञा के मुताबिक जीवन जीने की आज्ञा दी।

दि. ३ फरवरी, १९७२ में जब काकाजी को साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की सच्ची पहचान पूरे समाज को करवाई। हम बहुत नसीबदार है कि आज के युग में सहजता से भक्ति कर पा रहे है। हठ-मान-ईर्ष्या-काम-क्रोध-लोभ और अहंकार इनसे हमें मुक्त होना है। विज्ञान और Technologyने आज बहुत विकास किया है। लेकिन हमें आध्यात्मिकता में ज्यादा उतरना है। अगर हमें सुखी होना हो, परमशांति प्राप्त करनी हो तो हमें जो स्वरुप मिले है उनमें महाराज प्रगट है वह बात का स्वीकार कर लेना है। ऐसा करेंगे तो हम सबसे बुद्धिशाली है।

वानरों को रामचंद्र भगवान मिले तो वे वैकुंठवासी बन गये, गोपीओं को श्रीकृष्ण भगवान मिले तो वे गोलोकवासी बन गये, वैसे काठी-कोळी-कणबी-सुथार-लुहार जैसे सभी जातिवालों को स्वामिनारायण भगवान मिले तो वे अक्षरधाम के अधिकारी बन गये। हम युवासेनाओं को योगीजी महाराज मिले तो हम नारायणीसेना के सभ्य बन गये। हमें सत्पुरुष और उनके संबंधवालों की दिल से सेवा कर लेनी है,

Sant Bhagwant Sahebji's 85th Birthday celebration at Anoopam Mission

At Bhuj Temple, Kutchh

तो भगवान की विशिष्ट प्रसन्नता हमें सहज ही प्राप्त हो जायेगी। जब रामलल्ला की मूर्ति अयोध्या में बिराजमान हुई तब ऐसा कहते थे कि दिल्ली, उत्तरप्रदेश Dry State हो गया। मुझे लगा वहाँ बिना पानी का शहर? फिर किसीने बताया कि Dry का अर्थ बिना शराब। वैसे जब हम सभा में आये, समैया-शिबिर में बैठे हो तो Dry Mobile Day कर देना चाहिए। सभा सुनते समय Mobile को बिलकुल देखना नहीं है। तो हम किसीके अभाव-अवगुण में ना जाये वही प्रार्थना।

❊ **बुधवार, दि. २७ मार्च को प.पू. वशीभाई और गुणातीत ज्योत की बहनोंने कच्छ के शिनाई मंदिर की मुलाकात ली और सत्संग का लाभ दिया।**

उसी दिन वशीभई भुज मंदिर के दर्शन के लिये भी पधारे थे, जहाँ वे वहाँ के संत पू. सुखानंदनस्वामीजी से भी मिले।

With P. Sukhanandanswami, Bhuj

❊ **रविवार, दि. ३१ मार्च को पू. योगिनीबहन का ७३वाँ प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।**

प्रासंगिक उद्‌बोधन में सभी संतबहनोंने योगिनीबहन के विशिष्ट गुणों का दर्शन स्वानुभाव के प्रसंगो द्वारा कराया। उसके बाद शिकागो से दिनकरभाई तथा पवई के संतभाईयोंने यागिनीबहन का माहात्म्यदर्शन कराया और आशीर्वाद भी दिये।

P. Yoginiben's 73rd Birthday celebration at "Akshardham" Temple, Powai

अक्षरधामगमन

बोरीवली, मुंबई में रहनेवाली सेवाभावी एवं सरल ऐसी प.भ. प्रभावती उन्नीकृष्णन (उम्र-७९) काफी समय से बीमारी से जूझकर गुरुवार, दि. २१ मार्च को अक्षरनिवासी हुई।

अपने परिवार में वे ८ भाई-बहन थे। उनमें से प्रभावतीबहन सबसे बडी बहन थी। उस हेतु उन पर ज्यादा जिम्मेदारीयाँ थी, जो उन्होंने बखुबी निभाई। वो पढाई में भी काफी पारंगत थी। अपने गांव में Post Graduation की डिग्री प्राप्त करनेवाली वे प्रथम महिला थी। उन्होंने Mathematics में M.Sc. की डिग्री प्राप्त करके वहाँ के कॉलेज में शिक्षक की नौकरी भी की और साथ में अपने भाई-बहनों को भी पढाया। सन् १९६० में अपने भाईयों के साथ मुंबई आई और यहाँ कॉलेज में शिक्षक की नौकरी की। निवृत्त होने तक Mathematics and Statistics का शिक्षण दिया। उसी दौरान उन्होंने Master of Philosophy का भी प्रशिक्षण लिया। साथ ही Mathematics and Statistics की दो पुस्तकें खुद लिखी और प्रकाशित भी की। निवृत्त होने के बाद मालाड की Atharva College of Engineering में भी सेहत अच्छी थी तब तक सभी को शिक्षण की तालीम दी। सन् १९८० में प.भ. उन्नीकृष्णन पनिक्कर के साथ उनकी शादी हुई, जो नायर अस्पताल में वरिष्ठ वैज्ञानिक के रुप में नौकरी करते थे। उनके संबंध से ही गुरुहरि काकाजी के साथ उनका जोग हुआ। इस तरह सत्संग में प.भ. दिव्याबहन तथा अन्य हरिभक्तों के साथ तथा नायर मंडल के साथ सहज ही वे जुड गये। सन् १९८१ में उनके घर पुत्री (प.भ. श्रीदेवीबहन) का जन्म हुआ और उसे प.पू. दिनकरभाई, प.पू. महेन्द्रबापु, प.भ. भरतभाई, प.भ. वशीभाई, पू. योगिनीबहन और पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों का आशीर्वाद मिला। आज पवई सत्संग समाज के साथ वे घनिष्ठता से जुडी है। प्रभावतीबहनने जब तक उनकी सेहत अच्छी थी तब तक गुणातीत समाज के सभी केन्द्रो में तीर्थयात्रा की और हर ७ तारीख की भजन संध्या में भी वे जरुर से पधारती थी।

ऐसी प्रेरणादायी, त्यागप्रधान और विशिष्ट सिद्धियोंवाला उत्तम जीवन उन्होंने जिया। सालों तक उनकी पुत्री श्रीदेवीबहन, उनके दामाद प.भ.डॉ. जयराजभाई नायरने उनकी बहुत ही अच्छी सेवा की।

P.B. Prabhavatiben's Trayodashi Mahapooja at Borivali

दि. ३१ मार्च को प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई, पू. अश्विनभाई और संतबहनों तथा अन्य हरिभक्तों उनकी त्रयोदशी की महापूजा करने खास उनके घर पधारे थे और परिवार को आशीष दिये थे।

भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों प्रभावतीबहन की आत्मा को सदैव अपने साथ रखें और उनके परिवार को इस दुःख से उभरने के लिये बल दे वही प्रार्थना।

।। સ્વામિશ્રીજી ।।

હે! કરુણાના કરનારા, તારી કરુણાનો કોઈ પાર નથી...

તા. ૧૭ એપ્રિલ, ૨૦૨૪ના ચૈત્ર સુદિ નોમના મંગલદિને પૂર્ણ પુરુષોત્તમ ભગવાન સ્વામિનારાયણના પ્રાગટ્યને ૨૪૩ વર્ષ પૂર્ણ થયાં.

પૃથ્વી પર પધારી એમણે માનવજાત પર અદ્‌ભુત અને અપરંપાર કરુણા વહાવી છે. એમની કરુણાનું કોઈ મૂલ્ય આંકી શકાય એમ નથી.

આપણે સહજ જ વિચાર કરીએ કે આપણાં એવાં કયાં સાધન કે એમનો આપણને જોગ થયો. એમ કહેવાય છે કે **'બ્રહ્માએ તેમના પચાસ વરસ ને દોઢ પહોર દિવસ ચડ્યો ત્યાંસુધી આ ચરણારવિંદની સ્તુતિ કરી ત્યારે મહારાજનાં ચરણ પૃથ્વી પર આવ્યાં...'** (સ્વા.વા.પ્ર. ૩/૪૬) એ પણ બ્રહ્માની સ્તુતિને કારણે નહીં, પણ એમની આપણા પ્રત્યેની અપ્રતીમ પ્રીતિને જ કારણે. આપણે થોડો વિચાર કરીએ તો આપણને ખ્યાલ આવશે કે આપણને જે મનુષ્ય દેહ મળ્યો છે એની કિંમત તો આંકી શકાય એમ છે જ નહીં. એક પાશ્ચાત્ય વૈજ્ઞાનિકે ફક્ત માનવશરીરનાં અંગોની કિંમત વર્ષો પહેલાં કાઢી હતી. ત્યારે એની કિંમત ૬ હજાર, ટ્રીલીયન ડોલર (એક ટ્રીલીયન ડોલર એટલે ૧૦ની ઉપર ૧૧ મીંડાં) કરી હતી. એ પણ ફક્ત અંગની જ કિંમત, માનવશરીરની જ કિંમત. તેની અંદરની ચેતનાનું મૂલ્ય તો આંકી શકાય તેમ છે જ નહીં! એ રીતે આજના જમાનાના માનવીનું સરેરાશ આયુષ્ય ૮૦ થી ૮૫ વર્ષ ગણીએ તો પણ આપણી એક-એક સેકંડ કરોડો રૂપિયાની થાય. આપણા ગુણાતીત પુરુષોએ આપણને એમના ઉપદેશની અંદર આ વાત વારંવાર કહી છે. પરંતુ આપણને તેનો યથાર્થ ખ્યાલ આવ્યો જ નથી. **મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ પ્રકરણ ૧ની ૧૯મી વાતમાં કહ્યું છે કે 'કરોડ્ય રૂપિયા ખરચે પણ આવા સાધુ મળે નહીં ને કરોડ્ય રૂપિયા દેતાં પણ આ વાતું મળે નહીં ને કરોડ્ય રૂપિયા આપતાં પણ મનુષ્ય દેહ મળે નહીં ને આપણે પણ કરોડ્ય જન્મ ધર્યા છે, પણ કોઈ વખત આવો જોગ મળ્યો નથી. નીકર શું કરવા દેહ ધરવો પડે?'**

આપણને ખ્યાલ આવશે કે આપણને મનુષ્યદેહની કેવી અદ્‌ભુત પ્રાપ્તિ થઈ છે. પુરાણોમાં અર્જુન અને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા વચ્ચેના સંવાદની એક વાત આવે છે, જેમાં અર્જુન શ્રીકૃષ્ણને પૂછે છે કે 'મનુષ્યજન્મ ક્યારે મળે?' ત્યારે કૃષ્ણ ભગવાન ઉત્તર આપે છે કે '૪૦૦ જોજન લાંબી એક પાણીથી ભરેલી વાવને આપણા વાળનાં ચાર ઊભાં ફાડિયાં કર્યા પછી એક જ ફાડિયાંથી આખી વાવને ઉલેચતા જેટલો સમય લાગે એટલા સમય પછી મનુષ્યદેહ મળે.' ત્યારે અર્જુને કહ્યું કે 'એમ જ કહોને કે મનુષ્યદેહ મળે જ નહીં!' તો કૃષ્ણ ભગવાને કહ્યું કે 'ન મળે એવું તો નથી, પરંતુ તે મળવો ખૂબ જ દુષ્કર અને દુર્લભ છે!'

આપણને મનુષ્યદેહ તો મળ્યો પણ એ જો પરદેશમાં ક્યાંક મળ્યો હોત તો? આફ્રિકાનાં જંગલના કે સહારાનાં રણના કે શીત પ્રદેશના એસ્કીમો વચ્ચે જો આપણો જન્મ થયો હોત તો

મનુષ્યદેહ મળવા છતાં પણ આપણને શું ફાયદો થયો હોત? બીજી વાત કે ભગવાન સ્વામિનારાયણે આપણા પર અત્યંત કરુણા કરી આપણને ભરતખંડમાં જન્મ આપ્યો. હવે ભરતખંડમાં પણ કોઈ અવાવરુ પ્રદેશમાં કે માનવ વસ્તી વગરનાં જંગલોમાં જો આપણો જન્મ થયો હોત તો પણ આપણને મનુષ્ય જન્મનો યથાર્થ લાભ મળત નહીં. ભગવાને અત્યંત કરુણા કરી આપણને આર્યપ્રદેશમાં જન્મ આપ્યો. ભૂગોળ–ખગોળના વચનામૃતમાં મહારાજે જણાવ્યા મુજબ આર્ય–અનાર્ય એમ બે જાતના પ્રદેશો છે. અનાર્ય પ્રદેશોમાં ગમે એટલું કરવા છતાં પ્રભુ કે એમના સંતનો જોગ થવો અત્યંત દુષ્કર છે. સ્વામિનારાયણ ભગવાને આપણી પર દયા કરીને આપણને આર્યપ્રદેશમાં કે જ્યાં ભગવાન અને સંતનો જોગ સુલભ છે એવા પ્રદેશમાં જન્મ આપ્યો.

આવા પ્રદેશમાં પણ કરોડો લોકોને સત્સંગનો જોગ નથી. સામાન્ય માણસની જેમ જ તેઓ જન્મે છે ને મરે છે. જ્યારે આપણને તો મહારાજે આ સત્સંગમાં જન્મ આપ્યો. આપણને સત્સંગમાં પણ પરોક્ષમાં કે નાસ્તિકો વચ્ચે રહેવાનું આવ્યું હોત તો આપણી શું દશા થાત? જગતમાં આસ્તિકોના પણ કેટલાય સંપ્રદાયો છે, કેટલીય માન્યતાઓ છે, કેટલાંય સાધનો તેઓ કરે છે, તેમ છતાં પણ સાચા સત્સંગનું સુખ તો અત્યંત દુર્લભ છે. આપણા પર સ્વામિનારાયણ ભગવાનની અસીમ કૃપા કહો કે તેઓએ આપણને આ જ સત્સંગમાં એટલે કે સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયમાં જન્મ આપ્યો.

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયની અંદર પણ કેટલાય ફાંટાં છે. કેટલીય બધી ઉપાસના ચાલે છે. તેની અંદર અક્ષરપુરુષોત્તમની શુદ્ધ ઉપાસનાવાળા સમાજમાં જન્મ આપી પ્રભુએ આપણા પર ખૂબ જ મોટી કૃપા કરી છે! બીજે બધે તો ઉપાસના જ ન સમજાઈ હોય તો ગમે એટલાં તપ–વ્રત–સાધન કરીએ પરંતુ તેનું પરિણામ અંતે તો શૂન્ય જ આવેને? અક્ષરપુરુષોત્તમની ઉપાસનામાં પણ ગુણાતીત સમાજની અંદર મૂકીને તો મહારાજે કરુણાની હદ કરી દીધી. ગુણાતીત સમાજમાં જો આપણે આવ્યા ન હોત તો સાચા સત્પુરુષને ઓળખી જ શકત નહીં અને જો સત્પુરુષને જ ન ઓળખી શકીએ તો આપણે શું સાધન કરવાં કે કેવી ભક્તિ કરવી કે કેવી રીતે એમને રાજી કરવા કે કેવો સત્સંગ કરવો તેની આપણને સાચી સૂઝ કેવી રીતે પડતે? તો પછી આપણે કરેલા બધા જ પ્રયત્નો વિફળ જતે. એમ કહીએ તો કદાચ અતિશયોક્તિ લાગે પણ આપણો સમય તો ખૂબ જ જતે એ વાત તો નિર્વિવાદ છે. આજે તો આપણને પ્રગટની નિષ્ઠાનો અદ્‌ભુત જોગ પ્રાપ્ત થયો છે અને એમાંથી જ પ્રત્યક્ષની નિષ્ઠા કરીને જ્યાં પણ આપણને ફાવે કે આપણાં અંગ પ્રમાણે રુચિ થાય ત્યાં જે કંઈપણ વ્રત–તપ–સાધન કરીએ તો તે લેખે લાગે. અરે, વ્રત–તપ–સાધન પણ જવા દઈએ, પણ આજે તો એવા પ્રગટ સત્પુરુષો મળ્યા છે કે જેઓ આપણને આપણી રુચિ પ્રમાણે, આપણાથી થાય એવાં સાધન, આપણાં જ પ્રારબ્ધ વાપરીને કરાવે અને આપણો જન્મ સાર્થક થઈ જાય. આ મહારાજની કરુણા નથી તો બીજું શું છે?

વચ.વર. ૧૯ પ્રમાણે પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપો દ્વારા આ પૃથ્વી પર અખંડ રહીને ભગવાન સ્વામિનારાયણે આપણા પર કેટલી મોટી કૃપા કરી છે! તો આજે એમની આ કૃપાને દિલથી સ્વીકારી એવાં ગુણાતીત સ્વરૂપો પાસે સરળતાથી બે હાથ જોડી તે કહે એમ કરીએ અને કોઈની પણ ખટપટ, અભાવ, અવગુણમાં ન પડીએ તો બહુ જ ઓછા સમયમાં ને બહુ જ સરળતાથી આપણે પણ અક્ષરધામનાં સુખના અધિકારી થઈ શકીએ એવી વ્યવસ્થા અત્યારના સમયમાં સ્વામિનારાયણ ભગવાને કરી આપી છે!

વળી આપણને બધી રીતે સ્વસ્થ રાખ્યા છે, તે પણ મહારાજની જ કૃપા છે ને? આપણે જો એમના ખરેખરા આશ્રિત હોઈશું તો આપણને અન્ન–વસ્ત્ર તો સહજ જ મળી રહેશે. કોઈ ભગવાને અત્યારસુધીના માનવજાતના ઈતિહાસમાં પોતાના આશ્રિતો માટે આવી ખાતરી આપી નથી. એ તો ઠીક પરંતુ અંતકાળે પણ દર્શન દઈ પોતાના જ ધામમાં તેડી જવાની બાંહેધરી પણ આજસુધી કોઈએ આપી નથી. આમ આપણા આ લોક અને પરલોક બન્ને સુધારે એવા ભગવાન ક્યાંથી મળે?

તો હવે બીજું આપણને જોઈએ છે પણ શું? ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ એમની વાતમાં કહ્યું છે કે 'ગમે તેમ કરીયે તો પણ વડોદરાનું રાજ આપણે આવે એમ નથી. માટે હૈયામાં શાંતિ રાખવી ને પ્રભુ ભજવા.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

જેવું મળનારું હતું તેવું મળી રહ્યું, માટે તૃષ્ણા મેલવી.' (સ્વા.વા.પ્ર. ૧૦/૧૮૩) ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ માનવમનના સીમાડાઓ જોઈને કરેલી આ વાતને આપણે ખરેખર મૂલવીએ અને પ્રભુએ આપેલા આવા અદ્‌ભુત સંજોગોને અને પરિસ્થિતિને ખૂબ જ સહજતાથી સ્વીકારી અખંડ આનંદમાં રહેવાની રીત સમજી લઈએ તો પછી આપણને દુઃખી કરનાર કોઈ છે જ નહીં. આવી અદ્‌ભુત પ્રાપ્તિ અને કેફ તેમ જ મસ્તીમાં આપણે સદાય રહી શકીએ એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને ચરણે ભગવાન સ્વામિનારાયણના મંગલ પ્રાગટ્યદિને પ્રાર્થના...

❋ ❋ ❋

Summary of Events

(1) P.P. Jyotiben's 85th Pragatyadin celebration at Gunatit Jyot-Vidhyanagar on 3rd March. (2) Bhajan Sandhya on 7th March at Surat. (3) Mahashivratri celebration at Surat on 8th March. (4) P.P. Guruji's 86th Pragatyadin celebration on 13th March at Delhi. (5) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 23rd March. (6) B.S. Bhagatji Maharaj's 195th and SantBhagvant Sahebji's 85th Pragatyadin celebration on 24th and 25th March at "Brahmajyoti", Mogri. (7) Visit by P.P. Vashibhai at Shinai and Bhuj (Kutchh) Temple on 27th March. (8) P. Yoginiben's Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 31st March. (9) Akshardhamgaman of P.B. Prabhavati Unnikrishnan at Borivali on 21st March. (10) Article on auspicious day of Lord Swaminarayan's Pragatyadin on 17th April.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta